

# Shri Adishakti Puja

Date : 9th April 1990  
Place : Kolkata  
Type : Puja  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 09
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	10 - 20
Hindi	-
Marathi	21 - 26

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahiri

कलकत्ता की आप लोगों की प्रगति देखकर बड़ा आनन्द आया। और मैं जानती हूँ कि इस शहर में अनेक लोग बड़े गहन साधक हैं। उनको अभी मालूम नहीं है कि ऐसा समय आ गया है जहाँ वो जिसे खोजते हैं, वो उसे पा लें। आप लोगों को उनके तक पहुँचा चाहिए, और ऐसे लोगों की खोज बिन रखनी चाहिए जो लोग सत्य को खोज रहे हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम लोग अपना विस्तार चारों तरफ करें। लेकिन उसी के साथ हमें अपनी भी शक्ति बढ़ानी चाहिए। अपना भी जीवन परिवर्तित करना चाहिए। अपने जीवन को भी एक अटूट योगी जैसे प्रज्वलित करना चाहिए जिसे लोग देखकर के पहचानेंगे कि ये कोई विशेष व्यक्ति है। ध्यान धारणा करना बहुत ज़रूरी है।

कलकत्ता एक बड़ा व्यस्त शहर है और इसकी व्यस्तता में मनुष्य डूब जाता है। उसको समय कम मिलता है। ये जो समय हम अपने हाथ में बाँधे हैं, ये समय सिर्फ अपने उत्थान के लिए और अपने अन्दर प्रगति के लिए है। हमें अगर अन्दर अपने को पूरी तरह से जान लेना है तो आवश्यक है कि हमें थोड़ी समय उसके लिए रोज ध्यान धारणा करना है। शाम के वक्त और सुबह थोड़ी देर। उनमें जो करते हैं और जो नहीं करते, उनमें बहुत अन्तर आ जाता है।

विशेषकर जो लोग चाहयता बहुत कार्य कर रहे हैं, सहजयोग के लिए बहुत महनत कर रहे हैं और इधर उधर जाते हैं, लोगों से बात चीत करते हैं, लेक्चर देते हैं, समझाते हैं। उनकी जो कहानी शक्ति है, जो देवी शक्ति है, वो धीरे धीरे कम होती जाती है। इसलिए और भी आवश्यक है कि ऐसे लोग ध्यान धारणा अवश्य करें।

सोने से पहले आप धोड़ी देर ध्यान कर लें। सवेरे नहाने के बाद, यही काफी है। लेकिन जब ध्यान होता है तो कैसे पहचाना जायेगा कि आपका ध्यान ठीक हुआ। ध्यान करते वक़्त, आपको निर्विचारता पहले स्थापित करनी चाहिए। उस वक़्त उसको "ये नहीं" "ये नहीं" या "नैति" "नैति" इस तरह से अपने विचारों को वापस कर देना चाहिए। करते करते पहले श्वास लेने से आप देखेंगे कि आपमें निर्विचारता आ जाएगी। अर्थात् फोटो सामने रखना चाहिए। और उसके सामने दीप जलाके, पैर पानी में रखके बैठना चाहिए। जिस वक़्त निर्विचारता आ जाए, और दोनों हाथ में चैतन्य बहना शुरू हो तो आप पैर पीछेकर के जमीन पर ध्यान में बैठ जाएँ। ध्यान में बैठकर के और उसकी गहनता को आप जाने। फिर विचार आना शुरू हो जाए तो उसे फिर कहना कि "ये नहीं" "ये नहीं"। या "क्षमा" "क्षमा"। क्षमा शब्द बहुत ज़रूरी है। उस शब्द से भी आपके विचार रुक सकते हैं। जब शान्ती नहीं रही तो आपकी अन्दूणी प्रगती किस प्रकार हो सकती है। जैसे की भूचाल आ रहा हो, तो भूचाल में किसी वृक्ष की प्रगति नहीं हो सकती। तो उस वक़्त मनुष्य एक विचारों के भूचाल में फँसा हुआ होता है तब उसकी प्रगति होना असम्भव है। इसीलिए आवश्यक है कि उस वक़्त वो अपने को शान्त स्थित कर ले। उसके लिए भी एक दो मन्त्र हैं। जिससे, आपके अन्दर शान्ती पहले प्रस्थापित हो। धीरे धीरे आप को आश्चर्य होगा कि ये सब प्रयास करने की ज़रूरत पड़ेगी नहीं। आप एकदम निर्विचार हो जाएँगे। किसी भी सुन्दर वस्तु या कलात्मक वस्तु को देखते ही आप एकदम निर्विचार हो जाएँगे। धीरे धीरे ये आदत बढ़ती जाएगी और जैसे जैसे बढ़ेगी ऐसे ऐसे आपकी अन्दूणी प्रगति होती जाएगी। आप एक दालान में आ गए लेकिन और दालान में भी आपको जाना है और पहचानना है अपने को। इसीलिए आवश्यक है कि ध्यान धारणा से गहनता में उतरें। उसकी पहचान ये है कि जब आप ध्यान धारणा से उठेंगे आपका मन नहीं चाहेगा कि उठे। धोड़ी देर आप फिर उसी ध्यान में लगे रहेंगे। आपको ऐसा लगेगा कि आपको बड़ा आनन्द आ रहा है। एक दम से आप नहीं उठ सकते। गर ध्यान धारणा के बाद आप अपना चिन्त किसी और चीज की ओर ले जा सकते हो, जैसे खाना खाना है, या सोना है, या बाहर जाना है, तो समझना चाहिए कि ध्यान नहीं लगा। क्योंकि ध्यान से छुटना ज़रा सा कठिन होता है। इस तरह से धीरे धीरे आपकी अन्दर प्रगति होती जाएगी और जब आप बाह्य में कार्य करेंगे तो आपको बड़ा आश्चर्य होगा कि आपकी शक्ति क्षिप्त नहीं होती, उल्टी बढ़ती जाती है। ऐसा देखा गया है कि जो फ़ॉरैन पार होने के बाद ही दूसरों को जागृत देना चाहते हैं और फिर उनमें पकड़ आ जाते हैं। असल में पकड़ होते नहीं हैं। जैसे की किसी बैरोमीटर में या किसी यंत्र में आप जान सकते हैं कि यहाँ घुआ निकल रहा है, कि यहाँ प्रकाश हो रहा है। उसी प्रकार आप भी अपने अन्दर सब कुछ जान सकते हैं। एक तरह का निर्व्याज स्वभाव आ जाना चाहिए। माने कि निराग आना चाहिए। फिर आपको पकड़ नहीं आएगी। आप कितने भी लोगों पे हाथ चलाएँ, कितनों को भी जागृत दें, कुछ भी कार्य करें। कितनी भी बिमारियाँ ठीक करें, आपके अन्दर उसका कोई असर नहीं आएगा। पर ये दशा आप बगैर ही अगर आप लोगों पर हाथ लगाने लगें तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी।



दूसरी बात ये है कि आप लोग पार हो गए हैं, आप बहुत ऊँची स्थिती में आ गए हैं। बड़ी कठिनाई से ये बात होती है। तो आपको ऐसे लोग मिलेंगे जो अभी अभी सहज योग में आए हैं। वो समझ लेना चाहिए कि अभी आए हैं। और उनसे कोई भी आक्रमक बात नहीं करनी चाहिए। अपने प्रेम से, बड़े जतन से, सम्भाल करके, हो सके तो कुछ खिलाने पिलाने की भी व्यवस्था करिये। जिससे वो लोग आपको इतना भयंकर न समझें क्योंकि साधु-सन्त लोग तो हाथ में डंडा ही लेके बैठते हैं। उस प्रकार नहीं होना चाहिए। उन्हें ये महसूस हो जाए कि सारे अपने भाई बहन हैं। उससे ही वो लोग जम सकते हैं। और अधिकतर मैंने देखा है कि एक आदमी लोग ऐसे आ जाते हैं सहजयोग में, जो लोगों को बहुत ज्यादा डिसिप्लीन सिखाते हैं। यहाँ नहीं खड़े हो, ऐसा नहीं करना है। खास सहज योग में डिसिप्लीन कोई नहीं है। क्योंकि आपकी आत्मा इतनी प्रकाशवान है कि उसके प्रकाश में धीरे धीरे स्वयं ही आप अपने को देखते हैं। और फिर धीरे धीरे आप अपने ऊपर हँसने लग जाते हैं। जैसे आपने अपनी प्रगति को प्राप्त किया, धीरे धीरे वो लोग भी अपनी प्रगति को प्राप्त कर लेंगे। ये प्रकाश आपके व्यवहार पे भी पड़ता है और दूसरों के व्यवहार पर भी।

सहज योग में साक्षी स्वरूप प्राप्त होता है। साक्षी स्वरूप तत्व में आप किसी चीज़ की ओर देखते मात्र हैं। उसके बारे में सोचते ही नहीं। कोई भी आपके अन्दर उसकी (रिफ्लेक्शन) प्रतिक्रिया नहीं आनी चाहिए। तो निरंजन देखना चाहिए। माने किसी चीज़ की ओर देखकर के उससे कोई सी भी प्रतिक्रिया न हो। बगैर किसी प्रतिक्रिया के उसे देखना मात्र, ये सबसे बड़ा आनन्द-दाई चेष्टा है। उसके प्रति कोई लालसा नहीं होती। जैसे कि एक गलीचा है। अगर उसके बारे में विचार ही आते रहें कि अगर ये मेरा है तो जल न जाए। खराब न हो जाए। गर दूसरे का है तो कितने का है, कहाँ से लिया। तो इन विचारों के कारण उसका आनन्द तो आपको मिला ही नहीं। तो जैसे निर्विचारीता पे आने पर जैसे कि एक सरोवर एक दम शान्त, उसमें एक भी लहर न हो, न तरंग हो, ऐसे शान्त मन में, सरोवर में, जिसके चारों तरफ बना हुआ सुन्दर निसर्ग है वो उसमें पूरी की पूरी प्रतिबिम्बित हो और दिखाई दे, ऐसा ही आपका मन हो जाता है।

एक बार एक साधक हमारे पेटों में आए और एक दम से उनकी कुण्डलीनी जागृत हो गई। दूसरे कमरे में जो लोग बैठे थे वो अन्दर आ गए क्योंकि उनको एक दम से महसूस हो गया कि मैं के साथ जो है उसमें से जो चैतन्य की लहरीयाँ बह रही थीं वो उन्हें महसूस हो गई। उन्होंने उसे गले से लगा लिया जब कि वो उसे जानते तक नहीं थे। और सब अफ्लाहिदित हो गए। इसी प्रकार जब आप दूसरे सहज योगीयों से मिलेंगे तो आपको ऐसा अनुभव होगा कि जैसे "मैं मुझ से ही मिल रहा हूँ।" नामदेव जब गीरा कुंभार से मिले तो उन्होंने कहा कि 'मैं तो यहाँ निर्गुण देखने आया था, वो तो सारा निर्गुण साकार हो गया।' इस तरह की समझ व सूझबूझ एक सन्त को एक दूसरे सन्त के ही लिए हो सकती है। आज तक तो मनुष्य द्वेष, ईर्ष्या, इसी में रहता है। लेकिन जब सहजयोगी हो जाता है तो उसको दूसरा सहजयोगी ऐसा लगता है कि मैंने जो निर्गुण को जाना था वो ये सगुण में खड़ा हुआ ये निर्गुण है। इस प्रकार आपसी प्रेम जो है ये बड़ा सूक्ष्म, बड़ा गहन, और बड़ा आनन्द-दायी हो जाता है।

हमें ये समझ लेना चाहिए कि हम बड़े ही सूक्ष्म और बड़े ही मजबूत धागे से बन्ने हुए हैं और आपसी प्रेम इस से बढ़कर आनन्द की कोई चीज है ही नहीं। अब बहुत से लोगों में ये बात होती है कि मेरा लड़का, मेरी बहन, मेरा भाई, मेरा घर। ये जो ममत्व है ये भी काटना है। इस ममत्व को किकूल ही कम कर देना चाहिए। और इसके छूटते ही आपमें बहुत ही ज्यादा आनन्द आ जाएगा। "मेरे" की भावना जो है ये अपने को आत्मा से दूर करता है। मैं कौन हूँ? मैं आत्मा हूँ। और जो कहे कि ये मेरी आत्मा है तो फिर वो सहज योगी नहीं। आत्मा अपनी जगह अकेला खड़ा हुआ है। इसका मेरा कोई नहीं है। इसका तो सिर्फ परमेश्वर से ही रिश्ता है। और आपसे भी ऐसा रिश्ता है जैसे कि एक पेड़ के अन्दर बहता हुआ रस है। जो सब को रस देता है पर किसी में चिपकता नहीं है। मेरा-पन प्रेम की हत्या है। आप एक वृन्द मात्र से सागर बन जाएंगे। इसी अमर्यादता में ही आनन्द है क्योंकि आप समुद्र के साथ उठते हैं और गिरते हैं। इसी तरह से मनुष्य वर्तमान में आ सकता है। जब ममत्व छूट जाता है तो आप के अन्दर एक बहुत बड़ा आन्दोलन हो जाता है जिससे आप अत्यन्त शक्तिशाली हो जाते हैं। और वही शक्ति कार्यान्वित होती है। और वोही सामूहिकता में बहुत बड़ा कार्य करने वाली है और सारे संसार का उद्धार भी उसी शक्ती के द्वारा हो सकता है।

एक नया दौर शुरू हो रहा है। सहजयोग में भी एक नया दौर आज शुरू हो रहा है। वो ये दौर है कि अब हम एक बड़े ही आंदोलन में आ गए जहाँ हमें अपने प्रश्न नहीं रहे। पर सबके प्रश्न हमारे प्रश्न हो गए। सारे संसार के प्रश्न हमारे हो गए। इसके लिए एक प्रबलता चाहिए, एक बढ़पन चाहिए। एक ऊँचाई चाहिए जिसमें की आप सारे प्रश्नों को ठीक से देख सकें और उसका हाल दे सकें। इसकी जिम्मेदारी सब आप लोगों पर है। सारे सहजयोगियों की जिम्मेदारी बहुत ज्यादा है। यही नहीं कि आप लोग सहजयोग से लाभ उठाएँ, उसका फायदा उठाएँ, उसमें रजें। ये सबके घर घर में पहुँचना है। और सबको ये आनन्द देना है। अगर ये कार्य करते वक्त आप लोगों ने किसी तरह से कमजोरी दिखाई या किसी तरह से ढिलाई की तो आप उसके लिए जिम्मेदार हो जाएंगे, और ये बात बहुत गलत हो जाएगी। इसलिए सहजयोग में पनपे हुए लोगों को चाहिए कि कृष्ण की तरह खड़े हो जाएँ।

कलकत्ते में सारे हिन्दुस्थान का मरम फैसा हुआ है। इसलिए ज़रूरी है कि आप लोग खड़े हो जाएँ और आगे बढ़ें और अपनी प्रगति करें। औरों की प्रगति करें और एक अपने व्यक्तित्व को विशाल बनाएँ। जब भी आपके अन्दर विचार आए कि मेरा बेटा ऐसा है, मेरा घर ऐसा है। तो ऐसे "मेरे" विचार को दूर रखो। तभी आप विशाल हो जाएंगे और ऐसे विशाल लोगों की इस नये आन्दोलन में ज़रूरत है। और इसकी तैयारीयों पूरी होनी चाहिये।

आशा है ये साल आप सबको बड़ा मुबारक हो। बड़ा विशेष साल है ये। और इस साल में मैं चाहती हूँ कि इस कलकत्ते में बहुत से लोग सहजयोग में आएँगे। उनके सम्भाल के, प्यार से, आदर से, समझा



कर के। कभी कभी आक्रमक होते हैं। कभी कभी गलत बातें भी कहते हैं। यहां सब किसी न किसी जाल में फँसे है। रूस में तो न उनको डर, न उनका कोई गुरु, एक दम कोरा कागज़ (सूरा प्लेट) होता है उस तरह के लोग थे। बहुत आसानी से सबको पार करा। यहाँ तो ऐसा है कि न इधर का न उधर का। मैं इस इस गुरु का, मैं उस गुरु का हूँ। आप अपने नहीं तो इसलिये बहुत समझा बुझाकर बात करनी चाहिए। फिर यहाँ और भी बिमारी ये है, कि गुरु के दर्शन करने जाना। गुरु का काम है बोध, दर्शन देना नहीं। लोगों में जागृति करना। जब तक वो कोई ज्ञान ही नहीं देते तो वो गुरु कैसे बने। गुरु का मतलब है ज्ञान देने वाले। ज्ञान माने आपके नसों में आप जाने कि ये चैतन्य क्या है। ये जब तक नहीं दिया तो ऐसे चीजों में फँस जाना भी एक तरह से अपने को नष्ट करना है। आप लोग सब बहुत बड़े साधक थे, और इसी प्रकार आप अनेक लोगों को भी इसका वरदान दें, और उनको सुखी करें। हमारे अंदर जो कुछ भी छिपा है वो हमारा अपना है, वो व्यक्ति में भी है, समष्टि में भी है। सामूहिक में भी कुछ कमियाँ हैं। उन सब कमियों को देखना चाहिए। हिन्दू, मुसलमान ईसाई या अन्यधर्मों के लोग यही बताएंगे कि कितनी त्रुटि की इन धर्मों में पर कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। इसलिये, क्योंकि ये सब मनुष्य के बनाये हुए धर्म हैं। जिन्होंने धर्म बनाये थे वो नहीं रहे। अब आप लोगों को जो धर्म बनाना है वो असली धर्म है। उसमें नैकतीयत किन्तुल नहीं होनी चाहिए। अगर मनुष्य ने धर्म बनाया है तो वो गलत होगा ही क्योंकि मनुष्य को अभी परमात्मा का सम्बन्ध हुआ ही नहीं। उन्होंने तो अच्छे भले धर्मों को गलत रस्ते पर डाल दिया। लेकिन अब आप लोगों को जो धर्म बनाना है, जो विश्व धर्म बनाना है। उसमें किसी तरह की मनुष्य की जो गलतीयें हैं, वो नहीं आनी चाहिए। क्योंकि ये देवक्र है और आप लोगों ने आत्म साक्षात्कार प्राप्त किया है। तो इमानदारी के साथ इसको ऐसा बनाना चाहिए कि जो शुद्ध हो, अद्वैती धर्म हो॥

इसी प्रकार हर आदमी जब देखेगा कि हमने इसमें जो पाया है वो सत्य पाया है। फिर ऐसा होगा कि जिस धर्म के आप पहले थे उस धर्म का सतत हमने यही पाया है, ये जो है ये हमारे अंदर जागृत हो गया है। आप किसी भी मनुष्य के बनाये हुए धर्म का पालन करें, आप कोई भी पापकर्म कर सकले हैं। लेकिन सहजयोग में आने के बाद आप बाँके में धार्मिक ही हो जाते हैं। आप सबका मला ही कर सकते हैं। पर जो लोग नए आते हैं उनके साथ चर्चा करते समय बहुत सम्भल कर बात करना, क्योंकि हो सकता है उनको महसूस हो कि उनके ऊपर आक्रमण हो रहा है। तो बहुत सम्भल कर उन्हें समझना है कि धर्म हमारे अंदर जागृत होना चाहिए। जैसे इसा मसीह ने कहा है कि आपकी आँख निरंजन होनी चाहिए। पर किसी क्रिश्चन की आँख निरंजन है क्या? इसी प्रकार इन महान लोगों ने बहुत बड़ी बड़ी बातें करीं। लेकिन वो होता ही नहीं। उससे उल्टी बात होती है। तो इसको धीरे धीरे समझाना चाहिए क्योंकि ये ऊँचे से प्रकाश में आ रहे हैं। उन्हें अनुभव देते हुए, उन्हें इस गलत फ़हमी से निकाल लेना है। और उनको धर्म में स्थित

करना पड़ेगा। धर्म की धारणा उनके अन्दर होनी चाहिए। जो जिस जगह से भी आ जाए उन सबको स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि इनमें से बहुत से लोग ऐसे हैं जो वाक़े सत्य को खोज रहे हैं। सत्य के मार्ग पर चलने वालोंको ही परमात्मा मिल सकते हैं।

ज्योत का कार्य क्या है। ज्योत जब तक जला रहे तब सब काम होता है। उसका कार्य होता है प्रकाश देना। जिस प्रकाश को आपने प्राप्त किया है वो ही आपको सबको देना चाहिए और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ। कोई धरानेकी बात नहीं। छोटे बच्चे बड़े आत्मविश्वासी लोग होते हैं। और वो किसी की परवाह नहीं करते। उनको जो ठीक लगता है वो कहते हैं। लेकिन जब हम लोग बड़े हो जाते है तो दिमाग में और चीज़ें भरी रहती हैं, बहुत से संस्कार हो जाते हैं जिनसे निकलना मुश्किल होता है। तो सिर्फ़ ये बात समझ लेनी चाहिए कि हमें एक बहुत मुझ बुझ के साथ, समझदारीके साथ एक प्रगल्भता के साथ [मैम्यूरिटी के साथ] बदपन के साथ सबसे व्यवहार करना चाहिए। सबसे प्यार दिखाना चाहिए क्योंकि ये प्यार ही की शक्ती है और इसी को प्राप्त करना है।

ये सबसे पहली पूजा है आदि शक्ति की। आदि शक्ति से ही सारी शक्तियाँ निकली है। महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती और ये ही 3 शक्तियाँ फिर उन्हीं में ही समाहित होती हैं। आदि शक्ति के सिवाय ये कार्य हो नहीं सकता। कारण कि सारे बच्चों में उनका प्रभुत्व है। और वोही हैं, जो कि हर तरह के बच्चों के आपसी सम्बन्ध की सम्भालती हैं, जिसे त्रिम संयोग कहते हैं। वो हर छुस से छुस बातोंकी जानती है। जैसे की किसी भी अवतरण की वैसे वो पूर्ण है और हमारा जो उत्थान [इन्फैन्स] हुआ है, उसके हर एक सीढ़ी पर [माइल-स्टोन] बने जड़े हुए हैं। लेकिन सबका एक ही प्रकार का कार्य था। जैसे वैदी का कार्य था जुष्टों का संहार करना और भवतों को बचाना। इसीलिए श्री कृष्णने लीला रचाई। ये सब लीला है। इसमें इतनी गम्भीरता की कोई बात नहीं है। श्री कृष्ण ने माधुर्य को लेकरके सबको जीता था और उन्होंने ऐसा कर्म किया कि हमारी जो भवित्यी थी, उसे धुमा कर के, धोड़ी मिठास डाल कर के, अपने चीज़ को कह देते थे। एक बड़ा छुवर उनका अवतरण रहा। और उसके बाद महावीर जी, बुद्ध इत्यादी का भी गम्भीर अवतरण रहा। और गम्भीरता से उन्होंने आत्मदर्शन की ही बात की। और सम्यज्ञान की बात करी। फिर बहुत गम्भीर चीज़ें हो गई और सर्वसाधारण लोग इसकी ओर नहीं आए। जो आए तो बेकार गम्भीरता में चले गए। और अपने रोज के जीवन को बड़ा ही कठिन बना दिया। क्योंकि न बुद्ध ने कहा था, न महावीर ने।

अब मानव जाली में जब तक आत्म साक्षात्कार नहीं होता, तब तक उसका दयावा नेर तक सीमा चलना कठिन है। ईसा मसीहके बाद सर्व साधारण लोग आए। तो उन्होंने फिर पोल के कहने से जो धर्म की रचना करी, उसके बजह से सारी गड़बड़ीयाँ होगई। इस प्रकार हर धर्म में गड़बड़ीयाँ होती गई, और इसीलिए



धर्म बड़ा कठिन और अगम्य सा बन गया है। और फिर आधुनिक काल में बहुत से लोगोंने भी कुण्डलीनी के बारे में गलत कह दिया।

अब प्रश्न ये था कि मनुष्य को किस तरह से बताया जाय कि परमात्मा है, सत्य है, वो आत्मा स्वरूप है। इसलिए फिर आदि शक्ति का अवतरण जरूरी है। आदि शक्ति ही ये कार्य कर सकती है। वो सब चक्रों का कार्य जानती है। और उसे मानव जाती में आकर के, <sup>मानव</sup> जैसा अवतरण लेना पड़ा। जिससे वो समझे कि इनके अन्दर क्या क्या दोष हैं। और फिर वो दोष निकालने के लिए क्या करना चाहिए। कुण्डलीनी का जाग्रण इन दोषों के रहते हुए भी कैसे हो जाए। कैसे ब्रह्म नाड़ी में से कुण्डलीनी को जाग्रण कर दी जाए, जिससे मनुष्य इसको प्राप्त कर ले। पहले इसको धोड़े प्रकाश से देखे। देखते देखते स्वयं ही समझ जाए कि उसको अपनी ही ओर दृष्टी करके, देख के, उसको वो शक्ति आ जाए कि उसे ठीक कर ले। ये कार्य ऐसा था कि जिसमें सभी देवी देवताओं का, सभी अवतरणों का और सभी महा पुरुषों का और सबका ही आना जरूरी था। उसी शरीर में धारणा कर कर के और इस संसार में अवतरण आना था। और इसीलिए ये अवतरण हुआ है। चूंकि सारे संसार का उत्थान होना है। जिस परमात्मा ने ये सृष्टि बनाई है, जिसने ये सारा संसार रचा है, वो कभी नहीं चाहेंगे कि ये संसार मनुष्य के हाथों बरबाद हो। और इसीलिए ये कार्य अत्यन्त विशाल है। ये नहीं हो सकता कि आप (कॉस) सूली पे चढ़ जाएँ, ये नहीं हो सकता कि हम मनन पे बातें करते जाएँ। इस पर मनुष्य को बढ़ना होगा, बनाना होगा। काफी मेहनत का काम है। पर ये सिर्फ माँ ही कर सकती है। माँ की ही शक्ती जो इसे कर सकती है। और उसमें प्यार, सहनशीलता और सूझबूझ न हो तो वो कर ही नहीं सकती। इसीलिए इस अवतरण की बड़ी महत्ता है। अर्पणा करें और इसको पाने पर सब कुछ हो ही जाता है, क्योंकि आप जानते हैं कि आदि शक्ति की जो महामाया स्वरूपनी प्रकृति है उसमें एक बड़ा भारी कारण है कि, गर वो महामाया न हो, तो आप उसको कभी जान ही नहीं सकते। वास्तविक में जब तक महामाया स्वरूप है तभी तक आप मेरे नज़दीक आ सकते हैं। नहीं तो आ नहीं सकते। आप सोचेंगे ये तो शक्ति है, इनके पास कैसे जाएँ। इनके पैर कैसे छूँ। इनसे बात कैसे करें। तो ये महामाया स्वरूप लेने से ही ये चीज़ बहुत सौम्य हो गई है। और इस सौम्यता के कारण ही आज हम सब एक हो गए हैं। और ये भी बहुत जरूरी था कि इस महा माया स्वरूप में ही हम रहें, और आप लोग उसे प्राप्त करते रहें और खो न जाएँ। जैसे समुद्र में खो गए। जैसे कबीर ने कहा "जब मस्त हुए फिर क्या बोले"। आप सबको जागृत रहना है और सबको देना है। मैं आपको खोने ही नहीं दूँगी। इस आनन्द में पूरी तरह से विबोध होके, कोई नहीं खो सकता है, इस आनन्द को बाँटे बिना आपको चैन ही नहीं आने दूँगी। इस तरह की चीज़ होगी तभी आप लोग समझेंगे कि आपको क्या कार्य करना है। तो आपका भी कार्य साधु संतों से एक तरह से अधिक है कि साधु संतों ने किसी को (रेलैगेंडेशन) जागृती नहीं दिया था। हाँ उन्हें उपदेश दिया, उन्हें समझाया। आप का कार्य ये है आप सबको जागृती दें। और उनको आत्म साक्षात्कारी बनाएँ और सारे संसार का आप अत्थान प्राप्त करें। बहुत महत्वपूर्ण और दिव्य कार्य है। और



इस कार्य के लिए आदि शक्ति का आना जरूरी था और उस आदि शक्ति के आगमन से ही ये कार्य शुरू हो गया है और बहुत अच्छे से हो रहा है। आशा है आप लोग समझेंगे और बहुत से ऐसे फोटो आ रहे हैं, जो चमत्कारी हैं। पर ये फोटो दूसरे लोगों को दिखाना नहीं चाहिए। क्योंकि उनको विश्वास ही नहीं होगा। और ये भी फोटो परम चैतन्य बना रहा है, वो भी एक साधारण कैमरा से जिसमें कोई शक्ति नहीं है। और अगर इतना प्रकाश मेरे सिर में है तो वो किसी को दिखाई क्यों नहीं देता? सिर्फ वो कैमरा में क्यों आ गया? आप लोगों के लिए मैं तो महा माया ही हूँ। कैमरा के लिए शायद नहीं हूँ। कैमरा के अन्दर की जो अणु रेणु हैं वो मुझे जानते हैं। आपको परमात्मा ने स्वतंत्रता दी है। इन जड़ वस्तुओं को स्वतंत्रता नहीं। वो तो परमात्मा के ही आज्ञा से चलते हैं, और पशु भी उन्हीं की आज्ञा में रहते हैं। उस स्वतंत्रता में किसी भी तरह की बाधा न आए, इसीलिए महामाया स्वरूप है। आपके जैसे हम हैं। हमारा सारा व्यवहार भी आप के जैसे है। आशा है कि आदि शक्ति की आज की पूजा आप लोगों को समाप्त हो।

मेरा आनन्द आशीर्वाद -



# ENGLISH TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze

(Translated from Hindi)

I am very happy to see the progress of the people of Calcutta. I know that there are deep seekers in this city. But they do not know as yet that the time has come, where they can get what they have been seeking. You people should go to them and search for such people who are seeking the truth. That is why it is important that we should expand ourselves in all directions. But with that we should increase our own power also. We should change our lives; We should also make our lives shining like a firm Yogi, so that people will recognize that such a person is special. And for this, meditation and contemplation is very important.

Calcutta is a very busy city and people get drowned in being busy.



They find very little time. This time which we have tied on our hands is meant for our own ascent and for our progress within. If we have to know ourselves from within it is important that we meditate for a while daily, in the evening and morning. A lot of difference comes between the ones who meditate and the ones who don't.

Specially people who do a lot of work for Sahaja Yoga, go here and there, talk to people, give lectures, make others understand; In such people the divine energy slowly gets depleted. That is why it is even more important and necessary that such people should meditate everyday.

In the morning after your bath and before sleeping, you must meditate for a while. This is enough. But when you meditate, how would you recognize whether you were in meditation and it was alright. During meditation you should first establish thoughtless awareness. At that moment you should keep saying 'not this' 'not this' and keep turning your thoughts away in such a manner. By doing this you will see that by taking a breath you will become thoughtless. You should keep the photo in front and light a candle. Put your feet in salt water and sit in front of it when thoughtlessness comes and vibrations start flowing in both hands then wipe your feet and sit on the earth in meditation. After going into meditation try to know its depth. If thoughts arise then again say 'not this' 'not this' or say 'Kshma' 'I forgive'. kshma is a very necessary word. Just by staying this your thoughts can stop. When there is no peace how can you have internal progress? Like in an earthquake a tree cannot grow. So similarly man also gets stuck in an earthquake of thoughts and then his progress is impossible. That is why at that time it is important to establish the peace within. After a while you will be surprised, that you do not need to do so much exercise. You will become thoughtless at once.

at once. Whenever you see any beautiful thing or artistic thing you will at once become thoughtless. Slowly this habit will grow and your inner progress will also grow.

You have entered a new threshold but you have to still enter another threshold and have to know yourself. That is why it is important that by meditation you go deeper. The recognition is that when you get up after meditation you don't feel like getting up. You feel like sitting in meditation a little longer. You feel very joyful and you can't get up at once. If after your meditation your attention immediately goes to other things, like I have to eat or have to sleep, or have to go out then know that you have not been in a stage of meditation. Because to leave the state of meditation is a little difficult. In this way you will slowly grow within and when you do any work outside then your power does not diminish, but on the contrary it increases. It has been seen that those who after realisation immediately want to give realisation to others can get caught up. Actually there is nothing like catches. It is like a barometer that tells you where the smoke is, where is the light. In a way an attitude of *non-expectancy* should be there. A detachment should come.

Then you will not get catches. It is like a barometer which tells you where the smoke is where is the light. In the same way you can also know everything within yourself. In a way there should be an attitude where there is a complete honesty. A detachment should come. Then you will not get catches. You can touch any amount of people give realisation to any amount of people, do any work. You can cure any amount of diseases. You will not be affected. But if you do not get this detached state, then you can get into trouble.

The second thing is that you people are now realised souls. You



have reached a very high state, which is attainable after great difficulties. You will find such people who have just come into Sahaja Yoga. You must understand that they have just come and you should not say anything aggressive to them. You should win them over with your love with effort, and care and understanding. And if possible by offering food and drink, by which they may not think you are so terrifying because saints and sages always seem to take a stick in their hands. Do not be like that. They should feel that all are our brothers and sisters. By this only will people stay in Sahaja Yoga. But I have seen that many people who come into Sahaja Yoga, start disciplining others too much. Don't do this, don't stand there etc. In Sahaja Yoga there is no discipline as such, because your Spirit is so full of light that in its glow, you can gradually see yourself. And then you begin laughing at yourself. Just as you slowly progressed so similarly others too will progress. This light shines on your behaviour and the behaviour of others also.

In Sahaja Yoga you get the witnessing state. In this witness state you only watch everything. You do not think about it. You should have no reaction within yourself. You should watch unstained by anything. To be able to watch without reacting is the most joyful effort. For example, there is a beautiful carpet. If you think about it that it is mine, I hope it does not get burnt, or spoilt; or if it is another's then how much it cost where did it come from, and many such thoughts, then you cannot enjoy the beauty of it. Your mind should be placid and thoughtless like the lake which is placid, with not a wave in it, which reflects the beautiful creation around it.

Once a seeker came to my feet and at once his Kundalini arose and the vibrations started flowing. From the next room the Sahaja Yogis came running in, as they immediately felt the vibrations flowing. In the same

way you will meet other Sahaja Yogis and you will feel that you have met yourself. When Namdev went to meet Gora Kumbhar he said, "I had come here to see the formless but the entire formless I have seen in your form". This kind of feeling only one saint can feel for another. Uptill now man only lives with jealousy and envy. But when he becomes a Sahaja Yogi, then he feels that the formless which he knew has taken form in the other person. In this way love for each other becomes very subtle, very deep and very joy giving.

We should understand that we are tied by a very subtle and strong thread and there is nothing greater than love for one another. But many people still think of 'my son', 'my child', 'my house', etc. This mine should be cut away and made as less as possible. Once this goes, a lot of joy will come within you. This feeling of 'mine' takes you away from the Spirit, Who am I? I am the Spirit. The Spirit stands alone by itself, and those who say that, it is my Spirit are not Sahaja Yogis. The Spirit does not have 'mine'. Its relationship is with God only. And with you its relationship is like the sap that, flows through a tree, which gives sap to every part and does not stick to anything. This mineness is the murder of love. From a drop you will become the ocean, and will break the boundaries of that drop as you will rise and fall with the ocean. In this way man can live in the present When this 'mine' gets broken, then you become extremely powerful. And the same power becomes effective. It is going to do a very big job in collectivity and the salvation of mankind can also be accomplished by this Power.

A new age has started. It is the age where we have entered a movement where the question of ourselves is not there. The question of all others, the whole world has become our concern. For this a strength a magnanimity, a height is required by which you can see all the problems



in a balanced way and give their solutions. The responsibility of all Sahaja Yogis is tremendous. It is not only that you take advantage of Sahaja Yoga, and grow in it, but you have to take it to the house of everyone and you have to give this joy to each one. And doing this job if you show any laxity or weakness then you will be held responsible. And it will be a very wrong act. So that is why people who are settled in Sahaja Yoga should stand up strong like a tree.

Calcutta is the place where the secret of success of entire India lies. That is why it is necessary that you people should stand up and come forward and progress. And also make others progress and make your personality great. Wherever you think that this is my son, my house, etc., then drive away this 'my' thought. Only then will you become great. And we need such great people in this new movement, and the preparedness must be complete for this.

This year is a very important year. And I want that many people should come to Sahaja Yoga. So bring them in with love, with respect and understanding. Sometimes by a little pressure and sometimes by saying some things in a round about way, as everyone is stuck in something or the other. In Russia they have no Gurus or cults. They were like a clear slate, so to say. So it was very easy to give them realisation. Here, they are neither here nor there. 'I belong to this Guru'. Because they are not their own, so speak to them with great understanding.

Then the other disease here is of wanting 'darshan' (audience) of the Guru. The duty of the guru is to give knowledge and not to give darshan. He should enlighten and give realisation to people. Till he does not give knowledge how is he a Guru? Guru means one who gives knowledge. And knowledge which you know on your central nervous system and where you

can feel the all prevailing power of God on your central nervous system. If he has not given this, then to be stuck on such things is, in a way, to destroy yourself.

You all were very great seekers and so you gained it. In the same way you should also give other people this blessing and make them happy. Whatever is of low quality is our own. It is there in the individual and also in the collective it is lacking. We should watch this lacking. The Hindus, Muslims, Christians and people of various religions tell me that they were searching in these Dharmas, but they could not benefit. The reason is that these are man made Dharmas. The ones who made the Dharmas are no more. The Dharma that you people have to make is the real Dharma. There should be no artificiality in it. If man has made a religion it is bound to go wrong, because so far he has not got connected to God. Man has taken the real religion and put it on the wrong path. But now you people have to make the World Religion. There should be no human faults in it, because it is Divine and you all have attained self-realisation. So with honesty you should make it pure which is an Inner Religion.

When every person will see that what he has got is the truth, then whichever religion he belonged to before, he will get the essence of it in Sahaja Yoga. He will realise that what is in our religion has actually awakened within us. If you follow any man made religion then you can commit any sin in the name of that religion. But after coming to Sahaja Yoga you yourself become Dharmic and think of the benevolence of all. But with new people, talk to them very carefully or they may feel that they are being aggressed. So you should make them understand very carefully that we have to awaken the Dharma within us. Like Christ said 'Thou shalt not have adulterous eyes'. But does any Christian have non-adulterous eyes? In the same way great saints spoke great things. But the followers



did just the opposite. So you should make them understand gradually as they are slowly coming from darkness to light. By giving them the experience, you should take them out of this wrong understanding, and make them settled in this Dharma. That flow and retention of Dharma should be there in them. From wherever anyone comes, accept him, because there are many seekers of truth among them. And God can be found by those only, who tread the path of truth.

What is the job of a lamp? Its job is to give the light. Till the lamp keeps burning, till then all works can be done. The light that you have got, you should give to others, and with full confidence. There is nothing to fear. Little children are full of confidence. They say what they think is right. They are not bothered about anyone. But when we grow up, our brains get filled with many other things and we get conditioned, and it becomes difficult getting out of it. So we must understand that we must deal with others with great understanding because this is the Power of Love which you have to attain.

This is the first time the Puja of the Adi Shakti is being done. All the Shaktis arise from the Adi Shakti. And also the Shaktis of Maha Kali, Maha Laxmi, Maha Saraswati. All these Shaktis get absorbed back in Her. Only the Adi Shakti can do this work, because She has supremacy over all the chakras. She is the one who controls the various permutations and combinations of the chakras. She knows the subtlest of the subtle. All the incarnations who came on this earth were a milestone on the ladder of our evolution. But they all had one type of work to do. Like the Goddess had to kill the Rakshas and save the devotees. That is why Shri Krishna arranged this play. This is all a play. There is no need to be so serious about it. Shri Krishna won everyone with his sweetness. He explained all our faults in a sweet and roundabout way. It was a very beautiful incarnation of His.



After Him came Mahavir and Buddha, who took an incarnation of Seriousness. In this seriousness they spoke of oneness of the Spirit and the knowledge of the Whole. Then seriousness developed and the people became serious-minded, and made their daily lives very difficult. Infact neither Buddha nor Mahavira had said so.

Till mankind does not get self-realisation till then he cannot go straight for very long. After Lord Jesus Christ, the ordinary people started following the religion started by Paul and then everything started going wrong. In this way in every religion things went wrong, because religion became difficult and inaccessible. In modern times people spoke very wrong things about Kundalini.

Now the question arose how mankind should be told that there is God, there is Truth and it is in the form of the Spirit. So it was necessary for the Adi Shakti, to incarnate, because only She could do this work. She knows each chakra. She had to come amongst mankind and take the birth of a human being, by which She could understand what are the problems and faults in human beings. How can the Kundalini be awakened despite these faults. And how to awaken the Kundalini through the Brahmarandra, by which humans can see with a little light. And by watching thus, they would themselves understand by looking at themselves, and then the Shakti would come into them by which they got cured. This new job was such that all the deities, the saints, the incarnations and all great people had to come. They had to come into the bodily form of the Adi Shakti who had to incarnate. And that is why this incarnation has come, so that the whole world can rise, can evolve. The Divine which made this universe, this world, would never want that His creation be destroyed at the hands of humans. And that is why this work is so tremendous.

Now it cannot be that you climb on the cross, or talk about it. In this, man will have to grow and make others grow. It is hard work. But this only a Mother can do, and only Her Shakti can do it. And if She has no love, understanding and patience, then She cannot do it. That is why this is such an important incarnation. As you know She is of the nature of Mahamaya. And there is a reason for this. If She was not Mahamaya then you cannot know Her. In reality, till there is the form of Mahamaya, only then you can come near me. Otherwise you cannot approach me. You will think She is the Shakti, how can I go near Her, how can I touch Her feet? How can I talk to Her? By taking the form of Mahamaya all this has become possible. And because of this mildness of Her form we are one today. It was necessary that I remain in this form of Mahamaya and you all should attain that state and not get lost in it. Like a drop getting lost in the ocean. You all have to remain in that enlightened state and you have to give to others. I will not let you get lost in it. You have to be fully awakened in this joy. No one can get lost. Without sharing this joy I will not let you rest in peace. When something like this happens. Only then you will realise your responsibility.

Your job is in a way greater than the saints and sages. The saints and sages did not give realisation to anyone. They gave lectures, tried to make people understand. Your job is that you have to awaken the Kundalini in people and make them self-realised and resurrect the whole world. This is an extremely important and Divine job. And for this the Adi Shakti Herself had to come. This work started by Her advent and is happening in a very beautiful way. I hope you people will understand this.

Lots of proof is coming by miraculous photographs. These should not be shown to non-Sahaja Yogis, because they will not believe it. These photographs are being made by the Param Chaitanya, and that also through

an ordinary camera which has no Shakti in it. But if there is so much light coming out of my head then why is it you people cannot see it? Why is it that only the camera records it? Because I am Mahamaya for you, but not for the camera perhaps. The atomic cells in the camera film know me. God has given you freedom. But these inanimate objects are not free. They move only through His will. In this freedom there should be no disturbance or flaws, that is why She is the form of Mahamaya. I am like you. My entire behaviour is like yours.

May this Puja of Adi Shakti be attained by you.

May God Bless you.



# MARATHI TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahiri

फलकल्यातील तुम्हा लोकांची प्रगति पाहून मी आनंद झाला. आणि या शहरामध्ये अनेक लोक मीपुढे गहन साधक आहेत हे मी जाणते. त्यांना ज्ञान समजले नाही की, अशी वेळ आली आहे की ज्याला ते शोधत आहेत ते त्यांना मिळणार. तुम्हा लोकांना त्यांच्यापर्यंत पोहोचले पाहिजे. आणि अशा लोकांचा शोध घेतला पाहिजे, जे सत्याला शोधित आहेत. यासाठी आपला किंवा चारी वाजून करणे आवश्यक आहे. पण त्याबरोबरच आपल्याला आपली शक्तिसुद्धा वाढवली पाहिजे. आपले जीवनसुद्धा परिपूर्ण केले पाहिजे. आपले जीवन सुद्धा एका अतुट ज्योतीप्रमाणे प्रज्वलित केले पाहिजे. ज्याला पाहून लोक ओळखतील ही काही विशेष व्यक्ति आहे. ध्यानधारणा करणे मीपुढे जरी आहे.

कलकत्ता एक पुराण गजबजाटाचे शहर आहे. आणि याच्या गजबजाटामध्ये मनुष्य बुडून जातो. त्याला वेळ कमी मिळतो. हा जो वेळ आपण आपल्या हातामध्ये राखला आहे. तो फक्त उत्पानासाठी व आपल्या अंतर्गत प्रगतीसाठी आहे. आपल्याला जर आतून स्वतःला पूर्णपणे जाणून घ्यावयाचे असेल तर आपण थोडा वेळ रोज त्यासाठी ध्यानधारणा करणे आवश्यक आहे. संध्याकाळी आणि सकाळी थोडा वेळ. त्यामध्ये जे करतात व करीत नाहीत त्यामध्ये पुष्कळ फरक येतो. विशेषतः जे लोक बाड्यांत मीपुढे करीत आहेत, आणि सहजयोगासाठी मीपुढे मेहनत घेत आहेत. इकडे तिकडे फिरत आहेत, लोकांची गप्पागोष्टी करीत आहेत. लेक्चर्स देतात, समजावतात. त्यांची जी स्हावी शक्ति आहे, जी दैवी शक्ति आहे ती हळू हळू कमी होत जाते. त्यासाठी अशा लोकांनी ध्यानधारणा जरूर करणे जास्तच आवश्यक आहे.

आणि शोधण्यापूर्वी थोडा वेळ ध्यान करा. आणि सकाळी आंघोळ केल्यावर थोडा वेळ ध्यान करा, हे पुरेसे आहे. पण जेव्हा ध्यान करता त्यावेळी आपले ध्यान नीट झाले हे कसे ओळखणार? ध्यान करताना आपल्याला निर्विचाराता प्रस्थापित केली पाहिजे. त्यावेळी आपल्याला "हे नाही", "हे नाही", "नैत", "नैत" या त-हेने आपल्या विचारांना परत पाठवले पाहिजे. असे करत करत थोडा वेळ स्वतःची ध्यानाला आपल्यामध्ये निर्विचाराता आलेली दिसून येईल. अर्थात फोटो समोर ठेवला पाहिजे, आणि त्याच्यासमोर दिवा लावून पाय पाण्यात ठेवून बसले पाहिजे. ज्या वेळी निर्विचाराता येईल आणि देहही हातामध्ये चेतन्य वाहू लागेल तेव्हा आपण पाय पुसून जमीनीवर ध्यानामध्ये बसावे. ध्यानामध्ये बसून ध्यानामधील गहनता आपण समजून घ्या. मग विचार येणे सुरू झाले तर त्यांना परत सांगायचे, "हे नाही", "हे नाही", किंवा क्षमा, "क्षमा". थांबू शकतात. जर शांती नसली तर आपली अंतर्दृष्टीची प्रगति कशा प्रकारे होऊ शकेल? ज्याप्रमाणे मूर्ख येत आहे, तर मूर्खपणामध्ये कोणत्याही झाडाची प्रगति होऊ शकत नाही. तर त्यावेळी मनुष्य एका विचारांच्या जाळ्यात अडकला असतो त्यावेळी त्याची प्रगति होणे असम्भव असते. त्यामुळे त्यावेळी आपल्याला शांत, स्थित करणे आवश्यक असते. त्यासाठी सुद्धा दोन मंत्र आहेत. ज्यामुळे आपल्यामध्ये प्रथम शांती प्रस्थापित होते. हळूहळू आपल्याला आश्चर्य वाटेल, हे सर्व प्रयास करण्याची जरूरच पडणार नाही. आपण एकदम निर्विचार व्हाल. तसेच कोणतीही सुंदर किंवा कलात्मक वस्तु पाहून आपण एकदम निर्विचार व्हाल. हळूहळू ही संकल्पना वाढत जाईल. आणि जसजशी वाढेल तसतशी आपली आंतली प्रगति होत जाईल. आपण एका दालनामध्ये आलात, पण आपली दालनामध्ये सुद्धा आपल्याला जावयाचे आहे. आणि स्वतःला समजावून घ्यायचे आहे. यासाठी ध्यानधारणेने गहनेत उतरणे आवश्यक आहे. याची ओळख ही की जेव्हा आपण ध्यानधारणेतून उठाल, त्यावेळी आपल्याला मनाला उठावे, असे वाटत नसेल. थोडा वेळ परत तुम्ही त्याच ध्यानामध्ये दंग असाल. आपल्याला असे वाटत असेल की, आपल्याला मीपुढे आनंद मिळतो आहे. एकदम आपण उठू शकत नाही.

जर ध्यानधारणेनंतर आपण स्वतःचे चित्त कुठल्या दुस-या गोष्टीकडे धेऊन जात असाल, जसे, जेवायचे आहे, द्रोपायचे आहे, किंवा बाहेर जायचे आहे तर समजा, की ध्यान लागले नाही. कारण ध्यानातून सुटणे थोडेसे



कठीण असते. याप्रकारे हळू हळू आपली आंतली प्रगति होत राईल. आणि जेव्हा आपण चाड्यांत कार्य कराल, तेव्हा आपल्याला आश्चर्य वाटेल की आपली शक्ति क्षीण होत नाही, उलट वाढते आहे. असे पाहिले गेले आहे की जे लवकर पार शल्यावर दुस-यांना जागृत देऊ इच्छितात आणि त्यांच्या पकडेत येतात. सरे तर {कॅथेस} पकड नसते. ज्याप्रमाणे कोणत्याही बॅरोमीटर मध्ये किंवा यंत्रामुळे आपण समजू शकता की इथे धूर निघत आहे किंवा इथे प्रकाश आहे, त्याप्रकारे आपण आपल्या आंतमध्ये समजू शकतो. [एक प्रकारचा निव्याज स्वभाव झाला पाहिले म्हणजे ओतपतता आली पाहिले. मग आपल्याला पकड येणार नाही. तुम्ही कितीही लोकांवर हात फिरवा, कितीही जणांना जागृत या, कांहीही कार्य करा. कितीही रोग ठीक करा. आपल्यामध्ये त्याचा कांही परिणाम होणार नाही. पण ही दबा अन्त्याशिकाय जर आपण लोकांना हातात घेऊ लागला तर मुश्किल होईल.]

दुसरी गोष्ट अशी की, आपण लोक पार झाला आहोत, आपण सूप उच्च स्थितीत आला आहोत. मोठ्या अडचणीनंतर ही गोष्ट होते. तर आपल्याला असे लोक भेटतील जे आत्ताआत्ताच सहजयोगात आले आहेत. हे समजून घेतले पाहिले की, आत्ता आले आहेत आणि आत्ताच कुठली आक्रमक गोष्ट करता कामा नये. आपल्या प्रेमाने, सूप कटाक्षाने, सांभाळून, जमेत तर काही साध्यापण्याची व्यक्त्या करा. ज्यायोगे ते लोक आपल्याला इतके मयंकर काही समजणार नाहीत. कारण साधुसंत लोक तर हातामध्ये दांडका घेऊनच बसतात. त्याप्रमाणे झालं नाही पाहिले. त्यांना हे समजले की, सर्व आपले भाऊचिडण आहेत. त्यामुळे हे लोक जमू शकतात. आणि जसती करून भी पाहिले आहे की, एखादेच लोक असे येतात सहजयोगात, की जे पार जास्त शिस्त शिकवतात. इथे उभे रहायचे नाही, असे करायचे नाही. बास सहजयोगात शिस्त काही नाही, कारण आपला आत्मा इतका प्रकाशवान आहे की, त्या प्रकाशात हळू हळू आपण स्वतःच स्वतःला पडतो. आणि मग हळू हळू आपण स्वतःवरच हसू लागतो. ज्याप्रमाणे आपल्याला आपली प्रगति मिळाली त्याप्रमाणे हळू हळू स्वतःची प्रगति प्राप्त करून घेतो. हा प्रकाश स्वतःच्या व्यवहारावर पडतो. आणि दुस-याच्याही.

सहजयोगामध्ये सखी स्वरूप प्राप्त होते. सखी स्वरूप तत्त्वामध्ये आपण कोणत्याही गोष्टीला फक्त पडतो. त्याविषयी विचार करीत नाही. आपल्या आत त्याची काही प्रतिक्रिया येऊ नये. तर निरांजनाकडे पडा, म्हणजे कोणत्याही गोष्टीकडे पाहून त्याची प्रतिक्रिया होता नये. प्रतिक्रिया न होता त्या गोष्टीला फक्त पडणे, ही सर्वात मोठी आनंददायी किडा आहे. त्याबद्दल कसलीच तालसा नसते. जसा एक गालिचा आहे, जर त्याबद्दल विचारच येत राहिले की, जर हा माझा आहे तर, जळणार तर नाही, खराब तर होणार नाही, जर दुस-याचा असेल तर, केवढ्याचा आहे, कुठून घेतला, तर या विचारांमुळे त्याचा आनंद तर आपल्याला मिळालाच नाही. तर जसे निर्विचारतेमध्ये अन्त्यावर, ज्याप्रमाणे एक सरोवर एकदम शांत, त्यात एक लाटही नाही, तरंगही नाही, असे शांत आपले मनच जाईल, आणि त्या शांत मनात सरोवरातमध्ये त्याच्या चारी बाजूला सुंदर निसर्ग आहे, जो त्यामध्ये पूर्णपणे प्रतीबिंबित आहे आणि जो दिसतही आहे. असेच आपलेही मन होऊन जाते. एकदा एक साधक आमच्या पाया पडावयास आले आणि एकदम त्यांची कुंडलीनी जागृत झाली. दुस-या सौलीत जे लोक बसले होते, ते एकदम आंत आले. कारण त्यांना एकदम जाणीव झाली की, श्री माताजीबरोबर जे आहेत त्यांच्यामधून चैतन्य लहरी वाहू लागल्या आहेत. त्या त्यांना समजल्या. त्यांनी त्यांना मिठी मारली, ते त्यांना ओळखतही नव्हते तरीही! आणि सगळे अस्त्रोदित झाले. या प्रकारे आपण जेव्हा सहजयोगीयांना भेटाल तेव्हा आपल्याला असं अनुभवाला येईल, जसे काही मी स्वतःलाच भेटतो आहे. नामदेव जेव्हा गौरा कुंभाराला भेटले तेव्हा त्यांनी म्हटले की, मी तर इथे निर्गुण बघायला आलो होतो. तो सारा निर्गुण साकार झाला आहे. या प्रकारची समजणूक, आणि जाणीव, एक संताची दुस-या संतासाठी जसू शकते. आजपर्यंत तर बापूंस देव, ईश यांमध्येच राहात आहे, पण जेव्हा तो सहजयोगी बनतो तेव्हा, दुसरा सहजयोगी त्याला अशा प्रकारचा वाटतो की, "मला समजलेला जो निर्गुण होता, तो सगुणात उभा राहिलेला निर्गुण हा आहे." अशा प्रकारचे आपापसांमधील प्रेम जे आहे ते सूप सूक्ष्म, सूप गहन, सूप आनंददायी होऊन जाते.



आपल्याला हे समजून घेतले पाहिजे की, आपण सूप सूक्ष्म आणि खूप मजदूर घाण्यांनी कोपले गेले आहोत. आणि आपापसांतलं प्रेम याहून मोठी आनंदाची कोणतही गोष्ट नाही. आता सूप लोकांच्यामध्ये दखी गोष्ट असते की, माझा मुलगा, माझी बहिण, माझा भाऊ, माझे घर, हे जे ममत्व आहे हे सुध्दा कापले पाहिजे. या ममत्वाला तर एकदम कमी केले पाहिजे. आणि यातून सुटल्यावरच आपल्यात एकदम जस्त आनंद येईल. "माझे" ही जी भावना आहे, ती आपल्याला अत्यापासून दूर करते. मी कोण आहे? मी आत्मा आहे. आणि जो स्वतः हा माझा आत्मा आहे, तर तो सहजयोगी नाही. आत्मा आपल्या जागेवर एकटा उभा आहे. त्याचा "माझा" कोणी नाही. त्याचे तर फक्त परमेश्वराशी नाते आहे. आणि आपल्याशीसुध्दा असे नाते आहे, जसा बाडाच्या आत बाडगारा रस असतो, जो सगळ्यांना रस देतो पण कशासाठी चिकटत नाही. "माझे" पण प्रेमाची इत्या आहे. आपण फक्त एका पैवाने सागर डोकून जाता. या अमर्यादिततेमध्येच आनंद आहे. कारण आपण समुद्रावर उठला आणि पडला. या प्रकारेच मनुष्य वर्तमानात येऊ शकतो. [जेव्हा ममत्व सुटते तेव्हा आपल्या अंत एक मोठे आंदोलन होते. ज्यामुळे आपण अत्यंत क्षितिशाली बनता. आणि तीच क्षिति कर्णान्वित होते. आणि तीच सामुहिकतेमध्ये सूप महान कार्य करणारी आहे आणि सा-या जगाचा उध्दारसुध्दा त्याच क्षितिमुळे होऊ शकतो.]

एक नवी यात्रा सुरू होत आहे, सहजयोगात एक नवी यात्रा आज सुरू होत आहे. ती ही यात्रा आहे, की आता आम्ही एक महान आंदोलनामध्ये आलो आहोत जिथे आम्हाला स्वतःचे प्रश्न राहिले नाही. सा-यांचे प्रश्न आमचे प्रश्न झाले आहेत. सान्या जगाचे प्रश्न आमचे झाले आहेत. यासाठी एक प्रबलत्व पाहिजे, एक मोठेपण पाहिजे. एक उत्तुंगता पाहिजे ज्यामुळे आपण सारे प्रश्न व्यक्तीत पाहू शकू आणि त्याचे उत्तर देऊ शकू. याची जिम्मेदारी सर्व्या तुम्हा लोकांवर आहे. सर्व सहजयोग्यांची जिम्मेदारी सूप जस्त आहे. आपण लोकांनी सहजयोगाचा फायदा घ्यावा, लाभ घ्यावा, त्यात रुजावे असे नाही. हे सर्वांच्या घरी घरी पाहिजे. आणि हे सर्वांना आनंद देते. जर हे कार्य करताना, आपण लोकांनी कुठल्या प्रकारची कमजोरी दख्खिली किंवा कोणत्याही प्रकारची दिताई केली तर आपण त्यासाठी जिम्मेदार राहिल. आणि ही फार चुकीची गोष्ट होईल. त्यामुळे सहजयोगामध्ये स्थित ज्ञातेच्या लोकांनी कृपाप्रमाणे उभे राहिले पाहिजे.

कलकल्यामध्ये सान्या हिंदुस्थानचे मर्म अडकले आहे. त्यामुळे आपण लोकांनी उभे राहिले, पुढे होऊन आपली प्रगति करणे आवश्यक आहे. इतरांची प्रगति करा आणि आपले व्यक्तिमत्त्व विशाल बनवा. जेव्हा आपल्या अंतमध्ये असे विचार येतील की, माझा मुलगा असा आहे, माझे घर असे आहे, तेव्हा असा "माझ्या" विचारांना दूर ठेवा. तेव्हा आपण विशाल व्हाल. आणि अशा विशाल लोकांची या नव्या आंदोलनाला गरज आहे. आणि याची तयारी पूर्ण झाली पाहिजे. हे वर्ष आपणां सर्वांना भरभराटीचे जाईल अशी आशा आहे. फार विशेष वर्ष आहे हे. आणि या वर्षी कलकल्यात सूप लोक सहजयोगात येतील असे मला वाटते. प्रेमाने, जादवाने, समजावून, कधी कधी आक्रमक असतात. कधीकधी चुकीच्या गोष्टीसुध्दा सांगतात. इथे सगळे कोणत्या ना कोणत्या जाळ्यांत अडकले आहेत.

रशियांत तर ना त्यांना भिती ना, ना त्यांचा कोणी गुरू एकदम कोरे कागद, साफ प्लॅट जसते तसे लोक होते. सूप सहजपणे सगळ्यांना पार केले. इथे तर असे आहे की ना इकडचे ना तिकडचे. मी या गुरुचा, नाहीतर त्या गुरुचा आहे. आपण स्वतःचे नाही. त्यामुळे सूप जाणून संवरून गोष्टी केल्या पाहिजेत. आणि इथे आणखी रोग आहे हा की, गुरुचे दर्शन करायला जाणे. गुरुचे काम आहे बोध देणे. दर्शन देणे नाही. लोकांमध्ये जागृती करणे. जोपर्यंत ते काही ज्ञान देत नाहीत तर ते गुरू कसे होतात? गुरुचा जर्ज आहे ज्ञान देणारे. ज्ञान म्हणजे आपल्या नसांवर हे चैतन्य काय आहे हे आपण जाणणे. जोपर्यंत हे दिले नाही तोपर्यंत अशा गोष्टीमध्ये फसणेसुध्दा एक प्रकारे स्वतःला नष्ट करणे आहे. आपण लोक सूप मोठे साधक होता आणि आपण प्राप्त केले. आणि अशाप्रकारे आपण अनेक लोकांना याचे वरदान द्या, आणि त्यांना सुखी करा.

आपल्यामध्ये ज्या कांही कमतरता आहेत, त्या आपल्या स्वतःच्या आहेत. त्या एका भागामध्येही आहेत आणि पूर्ण भागातही आहेत. सामुद्रिकतेतसुद्धा आहेत. या सर्व कमतरता पाहिल्या पाहिजेत. हिंदू, मुसलमान, ख्रिश्चन आणि अन्य धर्मांचे लोक हेच प्रतिपादन करतील, की किती शोध घेतला, पण या घर्मांत कांही फायदा झाला नाही. याचे कारण हे सर्व मनुष्यांनी बनविलेले धर्म आहेत. ज्यांनी धर्म बनविले, ते राहिले नाही. आता आपण लोकांनी जो धर्म बनवायचा आहे, तो खरा धर्म आहे. त्यांत नकलीपणा किंवा असतां कामां नये. जर मनुष्याने धर्म तयार केला असेल तर तो चुकीचा असणारच कारण मनुष्याचा जन्म परमात्म्याशी संबंध आला नव्हता. त्यांनी तर चांगल्या भल्या धर्मांना चुकीच्या रस्त्यावर आणून सोडले. पण आता आपणाला जो धर्म बनवायचा आहे तो विश्वधर्म बनवायचा आहे. त्यांत माणसाच्या ज्या चुका (कोकल्याही प्रकारच्या) आहेत, त्या घेतां नयेत. कारण हा देवी आहे. आणि आपण लोकांनी आत्मसाक्षात्कार प्राप्त केला आहे. तेव्हा इनामदारीने याता असे केले पाहिजे की जो शुध्द आहे, अंतर्दामीचा आहे.

याप्रकारे प्रत्येक माणूस जेव्हा बर्लत की आम्ही यामध्ये जे मिळवले आहे ते सत्य मिळवले आहे. आणि मग असे होतल की ज्या धर्मांत आम्ही आयां होतो त्या धर्मांचे सत्य आम्ही इथे मिळवले. आणि ते आमच्या अंत जागृत झाले आहे. मानवाने केलेल्या कोणत्याही धर्मांचे आपण पालन करा. आपण कोणाचा सुन करूं शकता, चोरी करूं शकता, कोणाचा सत्यानारा करूं शकता, कोणतेही पापकर्म करूं शकतां. पण सहजयोगांत आल्यावर आपण सरोवर धार्मिक बनता. आपण सर्वांचे भलेच करूं शकतां.

पण जे लोक जीवन येतात, त्यांच्याशी चर्चा करतांना सूप संभाळून गोष्टी करा कारण त्यांच्यावर आक्रमण होते आहे, अशी कदाचित त्यांना जाणीव होऊ शकते. तेव्हा सूप संभाळून त्यांना समजाविले पाहिजे की धर्म आपल्या अंत जागृत झाला पाहिजे. असे येशू ख्रिस्ताने सांगितले आहे की आपले डोळे "निरंजन" झाले पाहिजेत. पण कुठल्या ख्रिश्चन माणसाचे डोळे निरंजन आहेत का? या प्रकारे या महान लोकांनी सूप मोठ्यामोठ्या गोष्टी केल्या पण ते झालेच नाही. त्यायोगे विरुध्द गोष्ट होते. तर यांना डळंढळ समजाविले पाहिजे कारण हे अंधारातून प्रकाशकडे येत आहेत. त्यांना अनुभव देतांना या चुकीच्या समजामधून काढून घेतले पाहिजे. त्यांना धर्मांमध्ये स्थित केले पाहिजे. धर्मांची धारणा त्यांच्या अंत झाली पाहिजे. जो ज्याठिकाणांहुन येईल त्या सर्वांचा स्वीकार केला पाहिजे, कारण यांच्यामध्ये अनेक लोक असे आहेत जे सरोवर सत्याच्या शोधांत आहेत. सत्याच्या मार्गावर चालणा-यांनाच परमार्था मिळू शकतो.

ज्योतीचं कार्य काय आहे? ज्योत जोपर्यंत जळत राहते तेव्हा सर्व काम होते. तीचं कार्य असतं प्रकाश देणे. जो प्रकाश बुझी प्राप्त केला आहे तोच तुम्हाला सर्वांना पावयाचा आहे. आणि पूर्ण आत्मविश्वाससह. कांही धायरण्याची गोष्ट नाही. छोटी मुलं सूप आत्मविश्वासी व्यक्ति असतात. आणि ती कशाचीही पर्वा करीत नाहीत. त्यांना जे योग्य वाटतं ते सांगतात. पण जेव्हा आम्ही लोक मोठे होतो, तेव्हा बुध्दीत सूप गोष्टी भरलेल्या असतात, सूपसे संस्कार झालेले असतात. ज्यांच्यामधून निघजे कठीण असते. तर फक्त ही गोष्ट समजून घेतली पाहिजे की आपल्याला एका अतीव सज्जदारीने, जाणीवने, एका प्रगल्भतेने, मॅच्युरिटीने, मोठेपणाने सर्वांशी व्यवहार केला पाहिजे. सर्वबद्धत प्रेम दळीबिले पाहिजे. कारण ही प्रेमशक्ति आहे. आणि तिलाच प्राप्त केले पाहिजे.

ही सर्वांत पहिली बुजा आहे आदिशक्तिची. आदिशक्तिमधूनच सर्व शक्या निघल्या आहेत. महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती. आणि याचा तित्ही शक्या परत त्यांच्यामध्येच सामावून जातात. आदिशक्तिशिवाय कांही होऊ शकत नाही. कारण सर्व चक्रांवर त्यांचे प्रभुत्व आहे. आणि त्याच आहेत ज्या हरप्रकारे चक्रांच्या आपापसांतल संबंधांना संभाळतात. ज्याला आपण परम्युटेन्स आणि कॉम्बिनेशन्स म्हणतो. त्यांना प्रत्येक सूक्ष्म, सूक्ष्म गोष्ट नाहीत असते. जसे, कोणत्याही अवतरणाला पहा, ते पूर्ण आहे. आणि आपले जे उत्थान झाले आहे, त्याच्या प्रत्येक पायरीवर प्रगतिनिदर्शक (मार्गलक्षण) म्हणून उभे आहे. पण प्रत्येकाचं कार्य एकाच प्रकारचं होतं. जसे देवीचं कार्य होते, दुष्टांचा संहार करणे आणि भक्तांचे रक्षण करणे, यासाठी सुध्दा कृष्णाने लीला रचली होती. ही सगळी लीला



आहे. यामध्ये मोमोपांशी काही गोष्ट नाही. दोघांनाही वापुयांनी सर्वांना विंचले आणि असे कार्य केले की, ज्या आपल्या भांती होत्या त्यांना फिरवून, थोडा मोडका घालून, आपली गोष्ट झोमिले असत. त्यांचे एक फार सुंदर अवतरण होते. आणि गोमिथ्याने त्यांनी सात्वतार्जुनाचीच गोष्ट केली. आणि अस्वत्थकान. गोष्ट केली. पण रूप मोमोवर गोष्टी ग्रह्या. आणि सर्वसाधारण लोक त्याच्याकडे आले नाहीत. जे आले ते केवळ गोमिथ्याचे चालते गेले. आणि आपल्या नित्य जीवनाला रूप कठीण बनवून ठेवले. कारण ना बुघ्याने संगीतज्ञ, ना भक्तीराजे.

आतां जोपर्यंत मानव जातीमध्ये अस्वत्थकान्नाकार होत नाही, तोपर्यंत त्याचे जास्त केवळ अस्वत्थ चालते कठीण आहे. पैरुस्तिस्तानंतर जे सर्वसाधारण लोक आले, त्यांनी परत पौलव्या सांगण्यावरून जी दगावी रचना केली त्यामुळे सगळी गडबड झाली. यापुढे प्रत्येक घर्मांमध्ये गडबड होत राहिली. आणि यामुळे धर्म रूप कठीण आणि अगम्य झाला. आणि अधुनिक कालांत ब-याचशा लोकांनीमुद्दा कुंडीतनीबद्धता पुढीचे संगीतले.

आतां प्रश्न असा होता की, मानवाला कशापुढे सांगायचे की, परमहत्ता आहे. सत्य आहे. तो अस्वत्थरूप आहे. यांसाठी आधिसंस्कृत्या अवतरणाची गरज आहे. आधिसंस्कृत्य हे कार्य करू शकते. तो सर्व वर्गांचे काम जाणते. आणि तिला मानवजातीमध्ये येऊन, मानवप्रधाने अवतरण घ्यायें लागते. त्यामुळे त्यांच्यामध्ये काय कस दोष आहेत ते त्यांना समजेल. आणि ते दोष कड्यापाहणी कस केले पाहिजे, हे दोष हजर असतांनायमुद्दा कुंडीतनीचे जागरण कसे होईल, इम्हनाडीमधून कुंडीतनीचे जागरण कसे करावयाचे, ज्यायोगे ते मानवाला प्राप्त होईल.

प्रथम यांना थोड्या प्रकाशांत पाहू. वे. पाडाती पाडाती स्वतःच समजतील की स्वतःकडेच दृष्टी टाकून, पाहून, त्यांच्यामध्ये ती शक्ति येईल की स्वतःचा ठीक करतील.

हे कार्य असे होते, की ज्यासाठी सर्व देवदेवता, सर्व अवतरणे, सर्व महापुरुष आणि इतरांचे योगे जरूरी होते. त्याच शरीरामध्ये धारणा करून या जगांत अवतरण पायचे होते. आणि यासाठी हे अवतरण झाले आहे. कारण सा-या विश्वाचे उत्थान धारणाचे आहे. ज्या परमहत्त्याने ही सृष्टी बनविली आहे. ज्याने या विश्वाची रचना केली आहे, त्यांना हे विश्व मानवच्या हाताने रसतळता जाणे अशी ईच्छा कधीच होणार नाही. आणि यासाठी हे कार्य अत्यंत विद्याल आहे. आपल्याला सुकी दिले जलार, असे होणे शक्य नाही. आपण मननवर सर्वा करत राडणार, हे शक्य नाही. यावर मानवाला बाडले पाहिजे, तयार झाले पाहिजे. रूप महानतीचे काम आहे. पण हे फलत आर्च करू शकते. आर्चनीच शक्ति हे करू शकते. आणि त्यामध्ये प्रेम, समजुतदारपणा, सहनशीलता नसली तर ती करू शकलीच नसली. त्यामुळे या अवतरणाचे पर महत्त्व आहे. आणि अशी काही सोप झाली की, परिनिमिचा दिवस आहे आणि आज आधिसंस्कृत्यचीच आपण पुनः करणे जरूरत वांगले आहे आणि हे मिळण्यावर सर्व कांही होऊनच जाते. कारण आपल्याला माहीत आहे की आधिसंस्कृत्यची जी महामायास्वरूपाची प्रकृति आहे, त्याचे एक मोठे कारण, की तर ती महामाया नसेल, तर आपण तिला कधी जाणूच शकणार नाही. वस्तुस्थितीत जोपर्यंत महामायास्वरूप आहे, तोपर्यंतच आपण माझ्या जवळ येऊ शकतो. नाहीतर येऊ शकत नाही. आपण विचार करता, या तर शक्ति आहेत. यांच्याजवळ कसे जाणार? यांच्या प्रायां कसे पडणार? त्यांच्यासी कसे बोलणार? तर हे महामायास्वरूप येत्यामुळे ही गोष्ट रूप सोप्य झाली आहे. आणि या सोप्यतेमुळे आपण सर्व पकड आहोत. आणि हेसुद्धा रूप जरूरी होते की, या महामायास्वरूपामध्ये अम्ही रडण, आणि आपण लोकांनी त्याला प्राप्त करीत रडणे, हरवून न जाता. जसे सागरामध्ये हरवून गेले. जसे कवीरांनी संगीतले, "जव घेत इप फिर क्या बोले।

आपणा सर्वांना जागृत राडावयाचे आहे. आणि सर्वांना पायचे आहे. मी तुम्हांला हरवू देणारच नाही. या आनंदात पूर्णपणे बोध झाल्यावर कोणी हरवू शकत नाही. हा आनंद अस्वत्थीशब्दां तुम्हांला घेत पडू देणार नाही. या त-हेची गोष्ट असेल तेव्हा तुम्हा लोकांना समजेल की आपल्याला काय कार्य करावयाचे आहे. तर तुमचे कार्य साधुसंतांपेक्षा एकप्रकारे अधिक आहे, की साधुसंतांनी केणाला जागीत दिली नाही. हो, उपदेश दिला, त्यांना समजोवले.

आपले कार्य हे आहे की आपण सर्वांना जागृति देणे, आणि त्यांना आत्मसंज्ञात्कारी बनविणे, सर्व विश्वाचे उत्थान प्राप्त करणे. फार महत्त्वपूर्ण आणि किंय कार्य आहे. आणि या कार्यासाठी आदिशक्तिचे आगमन जरूरी होते. आणि त्या आदिशक्तित्या आगमनानेच हे कार्य सुरु झाले आहे आणि रूप बांगल्या त-हेने होत आहे. आपणांला हे कळेल अशी आशा आहे. जसे बरेचसे फोटो येत आहेत जे चमत्कारी आहेत. पण हे फोटो दुस-या लोकांना दाखवितां नये. कारण त्यांचा विश्वासच बसणार नाही. आणि हे फोटो सुद्धां परमचैतन्य वनावित आहे तेसुद्धां एका साधारण कॅमे-यामध्ये, ज्यांत कांही शक्ति नाही. आणि जर इतका प्रकाश माझ्या डोळ्यांत आहे तर तो कोणाला दिसत कसा नाही? फक्त माझ्या कॅमे-यामध्ये कसा आला? आपण लोकांसाठी तर मी महामायाच आहे. कॅमे-यासाठी कदाचित नसेल. कॅमे-याच्या आंनले जे अगुरेणू आहेत ते मला जाणतात. आणि परमात्म्याने तुम्हांला स्वतंत्रपणे दिले आहे. या जड कर्तुंना स्वतंत्रता नाही ते तर परमात्म्याच्या आज्ञेनेच चालतात. आणि परमात्म्याने त्यांच्या स्वतंत्रतेत कोणत्याही प्रकारची बाधा येऊं नये यासाठी महामायास्वरूप आहे, तुमच्यासारखेच अशी आहेत. आमचा सारा व्यवहार आपणांप्रमाणेच आहे. आदिशक्तिची आजची पुजा तुम्हां लोकांसाठी संपन्न होईल अशी आशा आहे.

माझे अनंत आशिर्वाद.